वर्ग - नवम
साप्ताहिक-गृह-कार्य

17/04/2020

पाठ-1

दो बैलों की कथा

प्रश्न - अभ्यास

1.) कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजरी क्यों ली जाती होगी ?

⇒ कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी इसलिए ली जाती होगी क्योंकि कांजीहौस एक ऐसी जगह है जहाँ पर खोए हुए और लावारिस पशुओं को लाकर रखा जाता था और उनकी हाज़िरी ली जाती थी कि उन्हें पता चल सके कि कोई पशु मर तो न गया या भाग न गया हो।

2.) छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया ?

उत्तर छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम इसलिए उमड़ आया क्योंकि गया उन बैलों के साथ वही सलूक करता था जैसे उस लड़की कि सौतेली माँ उसके साथ करती थी।

3.) कहानी में बैलों के माध्यम से कौन - कौन सी नीति विषयक मूल्य उभर कर आए हैं :-

उत्तर कहानी में बैलो के माध्यम से निम्नलिखित नीति विषयक मूल्य उभर कर आए है :-

* प्रेम करने वाले स्वामी के प्रति वफादारी।
* स्वतंत्रता के लिए सदा प्रयास करना।
* कभी हिम्मत न हारना।
* महिलाओं का इज्जत करना।
* स्वयं कष्ट सहकर भी साथियों को मुक्त करना।

4.) प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभाव गत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर प्राय: मूर्ख को गधा कहा जाता है क्योंकि गधे को मूर्ख पशु माना जाता है। पर लेखक ने उसे शांत, सहिष्णु और सुख-दुख या हानि-लाभ में समान भाव वाला, माना है और उसकी तुलना ऋषि-मुनियों के स्वभाव से की है।

5.) किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर निम्नलिखित घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी :-

* दोनों को एक-दूसरे के भावों और विचारों की समझ थी।
* हल या गाड़ी खींचते समय एक की चेष्टा होती कि अधिक भार उसी के कंधे पर रहे।
* हल से खुलने पर दोनों एक-दूसरे को चाटकर थकान मिटाते थे।
* दोनों साथ ही चारा-भूसा खाते, एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता।
* दोनों मिलकर निर्णय लेते, एक-दूसरे की हिम्मत को बढ़ाते थे।
* कांजीहौस में एक मुक्त हो गया था। पर दूसरे के बँधे रहने इसके लिए मार भी सह गया।

6.) लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है यह भूल जाते हो। हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द्र के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर मानव समाज में महिलाओं पर अत्याचार होते हैं। उसे दबाया जाता है। उस पर पशु समाज में इस बात की जागरूकता दिखाकर लेखक ने

Write on White
Date
Page

उत्तर निम्नलिखित घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी :-

* दोनों को एक-दूसरे के भावों और विचारों की समझ थी।
* हल या गाड़ी खींचते समय एक की चेष्टा होती कि अधिक भार उसी के कंधे पर रहे।
* हल से खुलने पर दोनों एक-दूसरे को चाटकर थकान मिटाते थे।
* दोनों साथ ही चारा-भूसा खाते, एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता।
* दोनों मिलकर निर्णय लेते, एक-दूसरे की हिम्मत को बढ़ाते थे।
* कांजीहौस में एक मुक्त हो गया था। पर दूसरे के बँधे रहने इसके लिए मार भी सह गया।

6.) लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है यह भूल जाते हो। हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द्र के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर मानव समाज में महिलाओं पर अत्याचार होते हैं उसे दबाया जाता है। उस पर पशु समाज में इस बात की जागरूकता दिखाकर लेखक ने

Scanned with CamScanner

मनुष्य समाज पर व्यंग्य किया है।

7.) किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्यों के आपसी संबंधों को किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर:) किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य का गहरा संबंध है। वे एक दूसरे पर आश्रित हैं। किसान को हल चलाने, गाड़ी ढोने के लिए बैल चाहिए। बैलों को ताकतवर बनाए रखने के लिए उन्हें अच्छा चारा - दाना भी मिलना जरूरी है। कहानी में संबंधों को स्पष्ट दिखाया गया है। झूरी बैलों से प्यार करता है और बैल भी बढ़-चढ़कर काम करते हैं।

8.) इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे - मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताएँ।

⇒ मोती से अन्याय नहीं सहा जाता। वह विद्रोह करता है। कांजीहौस में दीवार तोड़कर भागने का प्रयास करता है। दोनों मिलकर दीवार गिराते हैं, तो कांजीहौस के सभी जानवर भाग जाते हैं। मोती नहीं भागता क्योंकि

उसके मित्र हीरा की रस्सी तोड़ी नहीं जा सकी। हीरा उसे अकेले भागने के लिए कहता है तो वह मना कर देता है।

Q.) आशय स्पष्ट कीजिए :—

i.) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता करने वाला मनुष्य वंचित हैं।

→ हीरा और मोती पशु होते हुए भी एक-दूसरे के मन के भावों को समझ लेते है। इस पर लेखक को लगता है कि शायद उनके पास कोई गुप्त शक्ति थी। मनुष्य श्रेष्ठ जाति का दावा करता है, पर उसे नहीं मालूम कि एक पशु की भावनाओं को कैसे समझ लेते हैं। स्वंय मनुष्य को इस शक्ति के बारे में कोई ज्ञान नहीं वह इस शक्ति से वंचित है।

ii.) उस एक रोटी से उनकी भूख क्या शांत होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

Write on White
Date
Page

गया के घर में हीरा-मोती पर अत्याचार होता था। उन्हें अच्छा भोजन नहीं मिलता था। गया की भतीजी रात को दो रोटियाँ लाकर चुपके-से दोनों को खिला देती थी। बैलों के लिए एक रोटी पर्याप्त नहीं है। अतः उससे भूख कम न हो सकती। पर यह जानकर उन्हें खुशी होती थी कि इस घर में एक बालिका तो है जो उसे प्यार करती है। यही उनके हृदय का भोजन था।

हृदय

पद (सूरदास)

पाठ की रूपरेखा

सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से यहाँ चार पद लिए गए हैं। श्रीकृष्ण ने मथुरा जाकर गोपियों को कोई संदेश नहीं भेजा, जिस कारण गोपियों की विरह वेदना और बढ़ गई। श्रीकृष्ण ने अपने मित्र उद्धव के माध्यम से गोपियों के पास निर्गुण ब्रह्म एवं योग का संदेश भेजा, ताकि गोपियों की पीड़ा को कम किया जा सके। गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं, इसलिए उन्हें निर्गुण ब्रह्म एवं योग का संदेश पसंद नहीं आया। तभी एक भौंरा यानी भ्रमर उड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा, गोपियों ने व्यंग्य (कटाक्ष) के द्वारा उद्धव से अपने मन की बातें कहीं। इसलिए उद्धव और गोपियों का संवाद 'भ्रमरगीत' नाम से प्रसिद्ध है।

गोपियों ने व्यंग्य करते हुए उद्धव को भाग्यशाली कहा है, क्योंकि वे श्रीकृष्ण के सान्निध्य में रहने के बावजूद उनसे प्रेम नहीं करते और इसका प्रमाण है उद्धव द्वारा दिया गया योग साधना का उपदेश। गोपियाँ योग साधना को स्वयं के लिए व्यर्थ बताती हैं। साथ ही, उन्होंने श्रीकृष्ण को उनका राजधर्म भी याद दिलाया है।

कवि-परिचय

हिंदी साहित्य की भक्तिकालीन काव्यधारा के कवि सूरदास का जन्म 1478 ई. में सीही नामक गाँव में हुआ था। कुछ विद्वान् उनका जन्मस्थान मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र को मानते हैं। सूरदास मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे, जिसके कारण उनकी ख्याति जगह-जगह फैल गई। सूरदास जन्म से नेत्रहीन थे या बाद में नेत्रहीन हुए इसके निश्चित प्रमाण नहीं मिलते। वह महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। सूरदास के तीन लोकप्रिय ग्रंथ-सूरसागर, साहित्य लहरी और सूरसारावली हैं। सूरदास ने कृष्णलीला संबंधी पदों की रचना सूरसागर में की, जो कि उनकी लोकप्रियता का प्रमुख आधार है। सूरदास के सभी पद गायन शैली में लिखे गए हैं। वे 'श्रृंगार' और 'वात्सल्य' रस के कवि माने जाते हैं। सूरदास की भाषा सहज, स्वाभाविक व माधुर्य से परिपूर्ण ब्रजभाषा है, जिनमें अलंकारों का प्रयोग अत्यंत सुंदर ढंग से किया गया है। सूरदास का निधन 1583 ई. में पारसौली में हुआ।

पदों का भावार्थ

पहला पद

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

» शब्दार्थ

ऊधौ–उद्धव; हौ–हो; अति–बहुत; बड़भागी–भाग्यवान; अपरस–अछूता; सनेह–स्नेह; तगा–धागा/बंधन; नाहिन–नहीं; अनुरागी–प्रेम से भरा हुआ; पुरइनि पात–कमल का पत्ता; दागी–दाग/धब्बा; ज्यौं–जैसे; माहँ–बीच में; ताकौं–उसको; प्रीति-नदी–प्रेम की नदी; पाउँ–पैर; बोरयौ–डुबोया; परागी–मुग्ध होना; अबला–बेचारी नारी; भोरी–भोली; गुर चाँटी ज्यौं पागी–जिस प्रकार चींटी गुड़ में लिपटती है।

भावार्थ

गोपियाँ व्यंग्य करते हुए उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत भाग्यवान हो, जो अभी तक श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम के बंधन से अछूते हो और न ही तुम्हारे मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हुआ है। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के गागर से करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार कमल के पत्ते हमेशा जल में ही रहते हैं, लेकिन उन पर जल के कारण कोई दाग दिखाई नहीं देता अर्थात् वे जल के प्रभाव से निर्लिप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उसमें रखा हुआ तेल पानी के प्रभाव से अप्रभावित रहता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के साथ रहने पर भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम तत्त्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आगे वे कहती हैं कि तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव नहीं डुबोया है और न ही तुम्हारी दृष्टि कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हुई, लेकिन

Scanned with CamScanner

हे उद्धव! हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, हमें तो तुम्हारी तरह कोई ज्ञान नहीं है। जिस प्रकार चींटियाँ गुड़ से चिपक जाती हैं, ठीक उसी प्रकार हम भी श्रीकृष्ण के प्रेम में उलझ (लिपट) गई हैं।

दूसरा पद

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।

» शब्दार्थ

माँझ—अंदर में; अवधि—समय; अधार—आधार; आस—आशा; आवन—आने की; बिथा—व्यथा/दुःख; जोग सँदेसनि—योग के संदेशों को; बिरहिनि—वियोग में जीने वाली; बिरह दही—विरह की आग में जल रही हैं; हुतीं—थीं; गुहारि—रक्षा के लिए पुकारना; जितहिं तैं—जहाँ से; उत तैं—उधर से; धार—योग की धारा; धीर—धैर्य; धरहिं—धारण करें/रखें; मरजादा—मर्यादा; लही—रही।

भावार्थ

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे मन की अभिलाषाएँ हमारे मन में ही रह गईं, क्योंकि हम श्रीकृष्ण से यह कह नहीं पाईं कि हम उनसे प्रेम करती हैं। हे उद्धव! अब तुम ही बताओ हम अपनी यह व्यथा किसे जाकर कहें? अब तक उनके आने की आशा ही हमारे जीने का आधार थी। उसी आशा के आधार पर हमने अपने तन-मन के दुःखों को सहन किया था। अब उनके द्वारा भेजे गए जोग अर्थात् योग के संदेश को सुनकर हम विरह की ज्वाला में जल रही हैं। हम जहाँ से भी श्रीकृष्ण के विरह की ज्वाला से अपनी रक्षा करने के लिए सहारा चाह रही थीं, उधर से ही योग की धारा बहती चली आ रही है। सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे हैं—अब जब श्रीकृष्ण ने ही सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया, तो भला हम धैर्य धारण कैसे कर सकती हैं?

Scanned with CamScanner

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग–2) के प्रश्नोत्तर

1 गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है? **CBSE 2014, 12, 10**

उत्तर गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि तुम तो बहुत दुर्भाग्यशाली हो, जो श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी अभी तक उनसे प्रेम नहीं कर सके। नहीं तो उनका रूप ही ऐसा है कि कठोर हृदय वाले व्यक्ति के मन में भी उनके प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाए। तुमने कभी प्रेम को जाना ही नहीं, इसलिए कृष्ण के प्रेम के धागे से दूर रहे हो।

2 उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है? **CBSE 2012, 11**

उत्तर *गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित दो तत्त्वों से की है*

(*i*) एक पानी के अंदर रहने वाले कमल के उस पत्ते से, जो पानी के अंदर रहते हुए भी पानी एवं कीचड़ के दाग-धब्बों से अछूता रहता है।

(*ii*) दूसरा जल में रखी हुई तेल की मटकी से, जिसकी एक बूँद पर भी जल का प्रभाव नहीं पड़ता।

3 गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? **CBSE 2012, 11, 10**

उत्तर *गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं*

(*i*) जिस प्रकार पानी के अंदर रहने वाला कमल का पत्ता पानी एवं कीचड़ से अछूता रहता है, उसी प्रकार तुम श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम से अछूते हो।

(*ii*) वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे। वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे, किंतु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

4 उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया? **CBSE 2013, 12, 11, 10**

उत्तर गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम और विरह में पहले से ही व्याकुल हो रही थीं। उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण मथुरा से शीघ्र ही वापस लौट आएँगे, किंतु जब श्रीकृष्ण ने उनके लिए उद्धव के माध्यम से योग का संदेश भेजा तो इसने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया, क्योंकि वे तो श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहती थीं।

5 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है? **CBSE 2016**

उत्तर कृष्ण ने गोपियों के प्रेम के महत्त्व को ठीक से नहीं समझा, इसी का परिणाम था कि उन्होंने गोपियों को प्रेम का संदेश भिजवाने की अपेक्षा उद्धव से योग का संदेश भिजवाया। यह गोपियों के प्रेम का अपमान था। गोपियों के प्रेम का तिरस्कार करके कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा को तोड़ा।

6 कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है? **CBSE 2012, 11, 10**

उत्तर *कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए गोपियों ने कहा है*

(*i*) वे श्रीकृष्ण के प्रेम में उसी तरह बँधी हुई हैं, जैसे चींटियाँ गुड़ से चिपकी रहती हैं।

(*ii*) उनके लिए श्रीकृष्ण तो हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं, जिन्हें उन्होंने मन, कर्म और वचन से अपने हृदय में बसाया हुआ है।

(*iii*) वे तो जागते-सोते, सपने में और दिन-रात कान्हा-कान्हा रटती रहती हैं।

7 गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है? **CBSE 2012, 11, 10**

उत्तर गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है, जिनका मन चकरी के समान चंचल है। उनका मन तो सदैव श्रीकृष्ण के प्रेम में ही रमा रहता है, इसलिए उन्हें योग की आवश्यकता नहीं है। यहाँ पर श्रीकृष्ण पर ही चंचल होने संबंधी व्यंग्य किया गया है, क्योंकि वे मथुरा जाकर उन्हें भूल गए थे।

8 प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए। **CBSE 2012, 11**

उत्तर यहाँ गोपियों का योग-साधना के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। उन्हें श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम था। उनके अनुसार, योग-साधना का महत्त्व तो उनके लिए होता है, जो जीवन से प्यार करते हैं। वे तो केवल श्रीकृष्ण से प्यार करती हैं। अतः वे योग को तुच्छ वस्तु समझती हैं। इसीलिए वे कहती हैं योग का संदेश उन्हें सौंप दो जिनके मन चंचल हैं।

9 गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए? **CBSE 2012, 2011**

उत्तर गोपियों के अनुसार राजा का परम धर्म यह है कि वह अन्याय का विरोध करे और अपनी प्रजा को हर प्रकार के अन्याय से दूर रखे। जो राजा अपनी प्रजा पर अन्याय करता है या उसे अन्याय से नहीं बचाता, उसे राजा होने का कोई अधिकार नहीं है। राजा का परम धर्म यह है कि उसे अपनी प्रजा को नहीं सताना चाहिए।

10 गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं? **CBSE 2012, 11, 10**

उत्तर श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गए योग के संदेश को सुनकर गोपियों को लगने लगा है कि वे उन्हें भूल गए हैं। वे पहले तो हर व्यक्ति को अन्याय से बचाते थे, अब वे उन पर ही अन्याय कर रहे हैं। वे तो पहले ही बहुत चतुर थे। अब तो उन्होंने राजनीति को भी पढ़ लिया है, जिससे उनकी बुद्धि बहुत बढ़ गई है। इस प्रकार उनमें बहुत से परिवर्तन आ गए हैं।

Scanned with CamScanner